Edu Bridge

GRADE
7
MIDDLE STAGE

Teacher's Manual

हिंदी

हिंदी भाग-7

अध्याय 1

मनुष्यता

कविता-बोध

उ०1. (क) मैथिलीशरण गुप्त

(ख) स्वार्थी होना

(ग) मनुष्य को स्वार्थ त्यागकर परोपकारी बनना चाहिए।

उ०2. (क) (i) (ख) (i)

उ०3. उसी उदार की सदा, सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो, मनुष्य के लिए मरे।

उ०4. (क) इन पंक्तियों में महात्मा बुद्ध के करुणा और दया से परिपूर्ण स्वभाव का वर्णन किया गया है। उनका प्रेम और दया का प्रवाह इतना प्रभावी था कि विनम्र और सरल लोग उनके सामने श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते थे। बुद्ध की करूणा और अहिंसा ने लोगों को उनकी ओर आकर्षित किया, और वे बिना किसी विरोध के उनके आदर्शों का पालन करने लगे।

(ख) इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि सच्चा मनुष्य वहीं है जो दूसरों के दुखों को समझे और उनके लिए अपना जीवन न्यौछावर करे। जो मनुष्य, मनुष्य की व्यथा न समझे उसका जीवन व्यर्थ है।

उ०5. (क) जो मरकर भी अपना नाम अमर कर जायें वही मृत्यु श्रेष्ठ है।

(ख) सरस्वती उदार व्यक्तियों की उदारता का बखान करती है।

(ग) उदार व्यक्तियों की संसार पूजा करता है।

(घ) विचारों या गलत भावों का विरोध ही विरुद्धावाद है और वह दया में बह गया।

(ङ) जो मनुष्य दूसरे की व्यथा को दूर कर सके वह उदार है।

व्याकरण-बोध

उ०1. सूर्योदय = सूर्य + उदय
भाग्योदय = भाग्य + उदय
वार्षिकोत्सव = वार्षिक + उत्सव
विवाहोत्सव = विवाह + उत्सव

उ०2. (क) वृथा = उदार व्यक्ति विवाद में शामिल होना वृथा समझते हैं।
(ख) प्रवृत्ति = उदार व्यक्ति की प्रवृत्ति समाजसेवा है।
(ग) उदार = राम एक उदार व्यक्ति हैं।
(घ) अखंड = हमारा देश अखंड है।
(ङ) विनीत = उदार व्यक्ति विनीत स्वथाव के होते हैं।

अध्याय 2

तिवारी का तोता

पाठ-बोध

उ०1. (क) सुदर्शन

(ख) तिवारी जी काशी में रहते थे, और उन्होंने तोता पिंजरे में पाला हुआ था।

(ग) तिवारी जी का तोता पिंजरे में रहता था।

(घ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि ''स्वतंत्रता अनमोल है''।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) जंगल वाला तोता पिंजरे के तोते से कहता है कि पिंजरे के तोते ने कभी खुले आकाश में अपने पर नहीं फैलाए। उसको पिंजरे में जो मिला वो खा लिया।

(ख) जो खुलकर अपनी जिन्दगी के फैसले नहीं ले सकता, वह आजाद होते हुए भी जंजीरों से जकड़ा हुआ है।

उ०4. (क) जंगली तोता जंगल में आजादी से विचरण करता था। उसे कोई भी नहीं रोक सकता था। परन्तु पिंजरे में रहने वाला तोता एक बंदी के समान था जो जी तो रहा था परन्तु किसी ओर की इच्छा से। वह चाहकर भी अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता था।

(ख) कहानी के अनुसार पिंजरे के तोता का दुर्भाग्य था कि उसने कभी खुले आसमान तले पंख नहीं फैलाए और कभी खुली हवा में साँस नहीं ली और कभी अपने रास्ते आप नहीं ढूँढ़े। कभी मौत का सामना नहीं किया इसलिए कभी जीवन के मजे नहीं लूटे। हर समय अपने मालिक के मुँह की तरफ देखता है।

(ग) पिंजरे का तोता कहता है कि ''मैं तो समझता हूँ, मेरा मालिक मुझ पर मेहरबान है और यह मेरी खुशकिस्मती है कि उसने मुझे यह बना दिया है। वर्ना कौन मुझे पानी पिलाता? कौन मुझे दाना खिलाता? कौन रात के जाड़े और अँधेरे में मेरी रक्षा करता? मेरे पड़ोस में बिल्लियाँ बहुत हैं, जिनके मुँह में दाँत हैं, पंजों में नाखून हैं, दिल में बेरहमी है, वे मुझे खा जातीं।''

(घ) जंगल के तोते ने पिंजरे के तोते से कहा कि सिर्फ एक दिन अपने मालिक की बात न सुन और उसकी बात का उसकी बोली में जवाब न दे और फिर देख, क्या होता है।

(ङ) मरे हुए तोते को आत्मा ने यह कहा कि इस जंगली तोते को चूरी दो। इसने एक कैदी को छुड़ाया है, एक मुर्दे को जिंदा किया है ऐसा इसलिए क्योंकि उसे समझ आ गया था कि जीवन आजादी में है न कि पिंजरे में।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) मैं जब चाहूँ पिंजरे में घूम सकता हूँ इसलिए कोई कैदी नहीं हूँ।
(ख) मैं सिर्फ अपने मन की बात सुनूँगा, क्योंकि मैं आज किसी की बात नहीं सुनूँगा।

उ०2. (क) पिंजरे के तोते बोले
(ख) मेरी बातें समझने की कोशिश कर
(ग) जंगली तोते खतरनाक होते हैं।
(घ) बेटों ने तोते को सींक चुभोई।

उ०3. (क) रहते थे (ख) जवाब दिया
(घ) छाई हुई थी

उ०4. (क) संबंधकारक (ख) सम्प्रदान कारक
(ग) अपादान कारक (घ) सम्प्रदान कारक
(ङ) अधिकरण कारक (च) सम्प्रदान कारक
(छ) करण कारक

उ०5. (क) पवित्र – गंगा पवित्र नदी है।
(ख) स्वभाव – राधा स्वभाव से बहुत सरल है।
(ग) जंगल – जंगल में बहुत से जानवर रहते हैं।
(घ) मुसीबत – मुसीबत में समझदारी से काम लेना चाहिए।
(ङ) प्रतिज्ञा – सैनिक सदा देश की सेवा करने की प्रतिज्ञा लेते हैं।
(च) मालिक – पिंजरे का तोता मालिक के कहे अनुसार कार्य करता था।

अध्याय 3

महान देशभक्तः नेताजी सुभाषचंद्र बोस

पाठ-बोध

उ०1. (क) एक शांति और अहिंसा वाला मोर्चा एवं दूसरों क्रांतिकारी व उग्र मोर्चा।

(ख) पहला मोर्चा गाँधी जी ने तथा दूसरा मोर्चा सुभाषचंद्र बोस ने सँभाला।

(ग) रायबहादुर जानकीदास बोस तथा प्रभावती देवी।

(घ) प्रोटेस्टेंट स्कूल में।

(ङ) स्वामी विवेकानन्द के।

(च) गाँधीजी से मतभेद के कारण।

(छ) ''कदम-कदम बढ़ाए जा, खुशी के गीत गाए जा।''

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) गाँधी (ख) वियना (ग) हिटलर

(घ) प्रभावती देवी (ङ) 5 जुलाई, 1943

उ०4. (क) भारत की आजादी की लड़ाई दो प्रमुख मोर्चों पर लड़ी गई– एक शांति और अहिंसा वाला मोर्चा तथा दूसरा उग्र एवं क्रांतिकारी मोर्चा। पहला मोर्चा गाँधी जी सँभाले हुए थे और दूसरे मोर्चे का नेतृत्व सुभाषचंद्र बोस ने सँभाला।

(ख) सुभाषचंद्र ने अंग्रेजों के विपक्षियों से मिलकर, उनसे सैनिक सहायता ली तथा विदेशों में स्थित भारतीय सेनाओं को संगठित किया। उन्होंने इस पवित्र कार्य के लिए अपना जीवन तक न्योछावर कर दिया। बढ़ते हुए सैनिक विद्रोह को देखकर अंग्रेजों को, भारत को आजादी देने पर विवश होना पड़ा। आज देश के बच्चे-बच्चे की जुबान पर नेताजी सुभाषचंद्र का नाम है। देशवासियों के मन में सुभाष बाबू के प्रति अपार श्रद्धा विद्यमान है।

(ग) एक अंग्रेज प्रोफेसर भारतीयों के विषय में अपमानजनक शब्द कहा करते थे। एक बार कक्षा में उस अंग्रेज प्रोफेसर ने भारतीयों

के बारे में ज्यों ही निंदाजनक शब्द कहे, सुभाषचंद्र आवेश में आ गए। उन्होंने कॉलेज में हड़ताल करा दी, क्योंकि नवयुवक सुभाष ने हड़ताल का नेतृत्व किया था, इसलिए उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय से दो वर्ष के लिए निकाल दिया गया।

(घ) आई०सी०एस० की परीक्षा पास करते ही उन्हें उच्च पद पर सरकारी नौकरी मिलनी थी, पर उन्होंने विदेशी सरकार की नौकरी को लात मार दी और अपने लिए देश-सेवा का काम चुना।

(ङ) सुभाषचन्द्र का सपना अपने देश को अंग्रेजों से आजाद कराना था। उसे पूरा करने के लिए उन्होंने कई संघर्ष लड़े जिसके कारण उन्हें बहुत बार जेल भी जाना पड़ा। उन्होंने आजादी दिलाने के लिए आजाद हिन्द फौज का भी निर्माण किया।

(च) आजादी के लिए सुभाषचंद्र ने देशवासियों से कहा कि ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा। इस फौज में पुरुष तथा स्त्रियाँ दोनों सम्मिलित हुए।

(छ) 18 अगस्त, 1945 को रात 9 बजे ताई होकू से जब जहाज उड़ा तो जहाज के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण 18 अगस्त रात 9 बजे उनका देहान्त हो गया। परंतु इसकी पुष्टि आज तक नहीं हो सकी है।

व्याकरण-बोध

उ०1. प्रारंभिक अहिंसा देहांत
प्रत्येक चिकित्सालय

उ०2. परीक्षा सन्यासी नेतृत्व
अंतर्गत स्वास्थ्य

उ०3. (क) अचानक बड़ा दुख आना
पिता की मृत्यु की खबर सुनकर तो श्यामा पर जैसे पहाड़ ही टूट गया।

(ख) त्याग दिखाना

माँ अपने बच्चों पर सब कुछ न्यौछावर कर देती है।

(ग) बन्धन से आजाद होना

वर्षों काम करने के बाद उसने गरीबी की बेड़ियाँ काट दीं।

(घ) अफसोस करना

अपने दोस्त की सफलता देखकर वह दिल मसोसकर रह गया।

(ङ) असफल होना

बिना तैयारी के परीक्षा देने गया और मुँह की खाकर लौट आया।

(च) अत्यधिक जोखिम लेना

सैनिकों ने युद्ध में जान हथेली पर रखकर दुश्मनों का सामना किया।

अध्याय 4

साँप की मणि

पाठ-बोध

उ०1. (क) रावण की लंकापुरी देखने के लिए।

(ख) चार दिन।

(ग) लेखक ने सुना था कि साँप मणि को अपने सिर पर रखता है।

(घ) खबर लानेवाले ने कहा, कि वह अभी साँप को मणि से खेलते देखकर आया है।

(ङ) लेखक ने बंदूक की बात कही तो आदमी ने कहा कि उसकी आवश्यकता नहीं है।

(च) साँप मणि को दिनभर मुँह में रखता है ताकि वह गर्म रहे।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) साँप की मणि के बारे में लेखक के दोस्त ने उन्हें जानकारी दी कि मणि साँप के मुँह में होती है।

(ख) जंगल में पहुँचकर लेखक ने देखा कि साँप मणि रखे बैठा है।

(ग) बंदूक की जगह आदमी ने कीचड़ का इस्तेमाल किया। वह चुपके-से एक पेड़ पर चढ़ गया और मुझे भी चढ़ने का इशारा किया। मैं भी ऊपर चढ़ा। तब वह डालियों पर होता हुआ ठीक साँप के ऊपर आ गया और एकाएक उस मणि पर कीचड़ फेंक दिया। अँधेरा छा गया। साँप घबराकर इधर-उधर दौड़ने लगा।

(घ) आदमी ने लेखक को पेड़ से नीचे उतरने से मना किया क्योंकि वह साँप वहीं पर कहीं-न-कहीं छिपा बैठा होगा।

(ङ) लेखक को मणि देखने पर भी विश्वास नहीं हो रहा था, क्योंकि वह बड़ी आसानी से उसे प्राप्त हो गई थी।

(च) मणि के बारे में लेखक ने उजागर किया कि यह एक किस्म का पत्थर है जो गर्म होकर अँधेरे में जलने लगता है। जब तक वह ठंडा नहीं हो जाता, वह इसी तरह रोशन रहता है।

साँप इसे दिन भर मुँह में रखता है ताकि यह गर्म रहे। रात को वह इसे किसी जंगल में निकालता है और इसकी रोशनी में कीड़े-मकोडे खाता है।

उ०4. स्वयं करें।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) सात दिन – निश्चित संख्या वाचक
(ख) पचासों किस्म – अनिश्चित संख्यावाचक
(ग) सात बादशाहों – निश्चित संख्यावाचक
(घ) बीस गज – निश्चित संख्यावाचक
(ङ) अधिक रोशनी – परिमाण वाचक
(च) साफ पत्थर – गुणवाचक
(छ) चार मीटर – निश्चित संख्यावाचक

उ०2.

मैं	= हम	वह	= वे
खबर	= खबरें	मणि	= मणियाँ
किस्सा	= किस्से	कहानी	= कहानियाँ

उ०3.

घबराना	= घबराहट	खड़खड़ाना	= खड़खड़ाहट
चहचहाना	= चहचहाहट	मुस्कुराना	= मुस्कुराहट
ठकठकाना	= ठकठकाहट	गुर्राना	= गुर्राहट

उ०4.

अ+धर्म	अ+न्याय
अ+सत्य	अ+काल
अ+लौकिक	अ+शिष्ट
अ+स्पष्ट	अ+परिचित

अध्याय 5

पर्यावरण

पाठ-बोध

उ०1. (क) पर्यावरण का अर्थ है– उस परिवेश या परिस्थितियों से है जिसमें एक जीवित जीव (लोग, जानवर तथा पौधे आदि) रहते हैं।

(ख) ऑक्सीजन शरीर के फेफड़ों में पहुँचती है।

(ग) कार्बन डाइ-ऑक्साइड के रूप में।

(घ) रक्त की शुद्धि नहीं होगी तथा फेफड़ों से सम्बन्धित रोग हो जाते हैं।

(ङ) साँस संबंधी रोग, तपेदिक, कैंसर आदि।

(च) पीपल का पेड़ दिन-रात शुद्ध वायु देता है।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (ii)

उ०3.

प्रदूषण	उससे होने वाले रोग
जल	रक्तचाप, चिड़चिड़ापन, बहरापन
वायु	हैजा, पेचिश, पेट की बीमारियाँ
ध्वनि	दमा, तपेदिक, श्वास संबंधी रोग

उ०4. (क) पर्यावरण में कई वस्तुएँ आ जाती हैं जैसे– हमारे चारों ओर वायु का घेरा, भूमि, पानी, पेड़-पौधे, सूर्य का ताप आदि।

(ख) वायु में कई प्रकार की गैसें मिली रहती हैं जिनमें नाइट्रोजन और आक्सीजन की मात्रा सर्वाधिक होती है।

(ग) अशुद्ध वायु में कार्बन डाइ-आक्साइड, धूल के कण तथा अन्य विषैले पदार्थों के कण अधिक पाए जाते हैं। ये सब हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

(घ) शुद्ध वायु का सेवन हमारे लिए अत्यावश्यक है क्योंकि यदि वायु में आक्सीजन की मात्रा कम होगी तो वह रक्त की शुद्धि ठीक ढंग से नहीं कर पाएगी तथा हमें फेफड़ों की अनेक बीमारियाँ हो जाएँगी।

(ङ) वायु के दूषित होने के अनेक कारण हैं– कल कारखानों की चिमनियों, सड़कों पर चलने वाले वाहनों से निकलता हुआ धुआँ

तथा गंदगी के कारण उनसे निकलने वाले विषैले तत्वों से वायु प्रदूषित हो जाती है। नगरों में जहाँ अनेक औद्योगिक केंद्र होते हैं तथा सड़कों पर अनेक वाहन चलते हैं, वहाँ की वायु बहुत प्रदूषित होती है। इस वायु में साँस लेने पर दमा, तपेदिक, कैंसर तथा श्वास संबंधी अनेक रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

(च) वाहनों, कल-कारखानों, मशीनों, लाउडस्पीकरों, रेलों, हवाई जहाजों आदि के शोर से ध्वनि प्रदूषण होता है।

(ज) हमारा कर्तव्य है कि हम पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए अपने घरों का कूड़ा-करकट उसके लिए बनाए गए स्थान पर ही डालें तथा अपने आसपास के स्थानों, सड़कों तथा सार्वजनिक स्थानों को साफ रखें। साथ ही अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ और पहले से लगे हुए वृक्षों को हानि भी न पहुँचाएँ।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) शुद्धता (ख) आवश्यकता (ग) उपयोगिता
(घ) कर्तव्यपरायण

उ०2. (क) दुर्व्यवहार, दुर्लभ, दुर्भाग्य
(ख) नागरिक, धार्मिक, आर्थिक

उ०3. सर्व+अधिक सु+अच्छ अति+अंत
जीव+अणु

उ०4. तीर = बाण संचालन जल = पानी जलना
मात्रा = परिमाण संख्या फल = परिणाम खाद्य पदार्थ

उ०5. (क) हमें अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहिए।
(ख) प्रदूषण की अत्यधिक मात्रा ने कई बीमारियों को जन्म दिया है।
(ग) प्रदूषित वातावरण स्वास्थ्य को भी नष्ट कर रहा है।
(घ) प्रदूषण लगातार बढ़ती हुई समस्या है।

अध्याय 6

हास्य : जीवन का आनंद

पाठ-बोध

उ०1. (क) हाँ, क्योंकि उसका व्यक्ति गंभीर होता है।

(ख) हँसमुख व्यक्ति

(ग) सुकरात एक दार्शनिक थे और उनकी पत्नी झगड़ालू स्वभाव की थी।

(घ) ये दोनों घुन्ने तथा अंतर्मुखी स्वभाव के थे।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii)

उ०3. (क) फिलासफर (ख) नियामत (ग) जीतना

(घ) अहिंसा

उ०4. (क) लेखक कहते हैं कि जीवन एक संग्राम है। इस संग्राम को हमें धर्मयुद्ध बनाना है जिसमें हमें अपने धर्म की रक्षा करती है जिसमें तन-मन सब कुछ हँसते-हँसते न्यौछावर करना है। इस धर्मयुद्ध में मनहूसियत, गाली-गलौच या फसाद का कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

(ख) लेखक कहते हैं कि जीत व हार सिक्के के दो पहलू होते हैं। जैसे हम अपनी जीत को खुशी से अपनाते हैं। उसी प्रकार हमें अपनी हार को भी सहर्ष अपनाना चाहिए। यदि मनुष्य पराजय को भी हँसी के साथ अपनाये तो वह पराजय को भी जीत में बदल सकता है।

उ०5. (क) स्टालिन और गाँधी जी में अंतर था कि गाँधी जी हँस सकते थे। स्वयं की गलतियों और कमियों पर ठहाका लगाकर मुक्त रूप से हँस सकते थे; स्टालिन से ऐसी आशा नहीं की जा सकती थी।

(ख) हँसना एक नियामत है। समाज में बहुत-सा खून-खराबा और झगड़ा-टंटा इसीलिए होता है क्योंकि हममें अक्सर हास्यप्रियता और हास्य की क्षमता की कमी होती है। यदि हम हास्यप्रियता को अपना लें तो लड़ाई झगड़े न हों।

(ग) लार्ड जार्ज भाषण दे रहे थे। एक विरोधी बोला, ''महाशय, भूल गए क्या, आपके पूर्वज गधा-गाड़ी चलाया करते थे।'' बिल्कुल

नहीं भूला, महाशय, लॉर्ड जॉर्ज हँसते हुए बोले, ''क्योंकि गाड़ी तो अब भी मेरे घर पर खड़ी है; गधा गायब था सो आज यहाँ मिल गया।''

(घ) संत तुकाराम एक बार घूमकर लौटे तो हाथ में सिर्फ एक गन्ना था। क्रोध में उनकी पत्नी ने गन्ना तड़ाक से पीठ पर दे मारा। गन्ना दो टुकड़े हो गया तो तुकाराम बोले, ''ठीक किया भाग्यवान, वैसे भी तेरे-मेरे खाने के लिए मुझे इसके दो टुकड़े करने पड़ते।''

(ङ) जीवन को सही ढंग से जीने का तरीका जीवन को हँसी-खुशी से जीना यह कठिन परिस्थितियों, क्रोध में भरे और दुर्जन लोगों से भी हँसते मुस्कुराते निपटने की कला है।

(च) प्रेमचंद जिंदगी भर बीमार रहते हुए गरीबी और अभाव से जूझते रहे, लेकिन उन्मुक्त और निश्छल हँसी हँसता था वह कलम का सिपाही!

(छ) गोर्की लिखता है कि मैंने लेनिन जैसी संक्रामक हँसी किसी और की नहीं देखी.... अजीब बात थी कि इतना कठोर, यथार्थवादी और शोषण से इतनी उत्कृष्ट घृणा करने वाला व्यक्ति बच्चों की तरह इतना हँसता था कि गला रुँधने लगता था, आँखों में आँसू आ जाते थे।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) सुकरात की पत्नी कैसी थी?

(ख) गन्ना दो टुकड़े नहीं हुआ।

(ग) आप जूते साफ कर दीजिए।

उ०2.

दुर्जन	= सज्जन	अग्रज	= अनुज
हार	= जीत	योग्य	= अयोग्य
पराजय	= जय	विशेष	= साधारण
सज्जन	= दुर्जन	मित्र	= शत्रु
सम्मान	= अपमान	विरोधी	= समर्थक

उ०3. (क) एक व्यक्ति बोले, ''पंडित जी आप भूल रहे हैं कि हर मसले के दो पहलू होते हैं।''

(ख) बिल्कुल नहीं भूला, महाशय, लार्ड जार्ज हँसते हुए बोले ''क्योंकि गाड़ी तो अब भी मेरे घर पर खड़ी है; गधा गायब था सो आज यहाँ मिल गया।''

अध्याय 7

ईमानदारी

पाठ-बोध

उ०1. (क) छद्म वेश धारण करने वाले को।
(ख) लोगों को धोखा देने के लिए।
(ग) महात्मा एक सिद्ध पुरुष होते हैं जबकि महात्मा के वेश में बहुरुपिया लोगों को मूर्ख बनाने के लिए महात्मा का रूप धारण करते हैं।
(घ) ईमानदारी एक सद्गुण है इसलिए जरूरी है।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) बहरूपिये, साधु (ख) साधु, यश (ग) गंभीर, डोली
(घ) धन का त्याग (ङ) सेठानी, विश्वास

उ०4. (क) बहुरूपिया कभी धोबी, कभी डाकिए का वेश धारण करता है।
(ख) बहुरूपिये ने साधु का वेश स्वयं को छुपाये रखने के लिए बनाया।
(ग) साधु की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई क्योंकि साधु के उपदेशों में जादू था।
(घ) जिसके कारण मानव, मानव नहीं रह पाता, वह धन है।
(ङ) साधु ने सेठ का धन लौटा दिया क्योंकि वह महात्मा जी के रूप को बदनाम नहीं करना चाहता था।

व्याकरण-बोध

उ०1. प्रसंगानुकूल मस्तकाभिषेक
आनंदानुभूति हर्षातिरेक
शेषांश नयनाभिराम

उ०2. (क) सेठ का रूप (ख) सेठ की (ग) मेरे लिए
(घ) सेठानी ने (ङ) संपत्ति को

उ०3. (क) जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है।
(ख) साधु ने माथे पर त्रिपुंड लगाया था।
(ग) साधु की तपस्या का यश चारों और फैल गया।
(घ) साधु के आशीर्वाद से सेठानी ठीक हो गई।

अध्याय 8

कलम, आज उनकी जय बोल!

कविता-बोध

उ०1. (क) देश सेवा में शहीद होना
(ख) पुण्यवेदी से तात्पर्य बलिदानों की भूमि है।
(ग) असंख्य वीर सपूतों को
(घ) राष्ट्र के वीर शहीदों की

उ०2. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)
(घ) (i)

उ०3. (क) जला अस्थियाँ बारी-बारी,
छिटकाई जिनमें चिंगारी।
जो चढ़ गए पुण्यवेदी पर
लिए बिना गर्दन का मोल,
कलम, आज उनकी जय बोल।

(ख) पीकर जिनकी लाल शिखाएँ,
उगल रहीं सौ-लपट दिशाएँ,
उनके सिंहनाद से सहमी
धरती रही अभी तक डोल,
कलम, आज उनकी जय बोल।

उ०4. कवि कहते हैं देश के वीरों को वास्तविकता से कोई मतलब नहीं है उन्हें इतिहास से कोई लेना-देना नहीं है। वीरों को अपने गुणगान की कोई इच्छा नहीं है क्योंकि उनके द्वारा की गई मातृभूमि की सेवा की महिमा का गुणगान तो स्वयं धरती, चन्द्र और ये पूरा भूगोल करता है। लेखक की कलम भी आज उनकी जय बोलती है।

उ०5. (क) प्रस्तुत कविता के कवि रामधारी सिंह दिनकर जी हैं। वे देशभक्ति की कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं।

(ख) हमें देशभक्तों की जय-जयकार करनी चाहिए क्योंकि देशभक्त बिना अपने जीवन की परवाह किए खुशी-खुशी मातृभूमि पर न्यौछावर हो जाते हैं।

(ग) 'जल-जलकर बुझ गए' कविता की इस पंक्ति का भावार्थ है कि हमारे देशभक्त मृत्यु के बाद भी अमर रहते हैं।

(घ) प्रस्तुत कविता की रचना कवि ने देशभक्तों को सम्मान देने के लिए की है।

व्याकरण-बोध

उ०1. एक-एक की बारी
तेज हवा व उसकी जलन
परिवार पत्नी तथा बच्चे
एक-एक वन में
आना व जाना
लाभ और हानि

उ०2. पुण्यवेदी = प्+उ+ण+य+अ+व्+ऐ+द्+ई
अगणित = अ+ग्+अ+ण+इ+त्+अ
महिमा = म्+अ+ह्+इ+म्+आ
स्नेह = स्+अ+न्+ए+ह्+अ
सूर्य = स्+उ+य्+र्
गर्दन = ग्+अ+र्+द्+अ+न+अ

उ०3.

अस्थि	= अस्थियाँ	चिंगारी	= चिंगारियाँ
लेखनी	= लेखनियाँ	दिशा	= दिशायें
कविता	= कविताएँ	शिखा	= शिखाएँ

उ०4.

अपना	= पराया	ठंडा	= गर्म
आज	= कल	लघु	= दीर्घ
इंसान	= दानव	धरती	= आकाश
देशभक्त	= देशद्रोही	आग	= पानी

उ०5.

अस्थि	= हड्डी	अग्नि	= आग
चंद्र	= चाँद	कर्म	= कार्य
दीप	= दीपक	स्नेह	= प्रेम

उ०6. (क) कलम = कलम में बहुत ताकत होती है।

(ख) दीप = दीपदान महादान होता है।

(ग) किनारा = नदी का किनारा बहुत संकरा है।

(घ) स्नेह = व्यक्ति को सबसे स्नेह करना चाहिए।

(ङ) धरती = धरती हमारी माता के समान हमारा पोषण करती है।

(च) महिमा = ईश्वर की महिमा अद्‌भुत है।

(छ) जय = जय हमेशा बड़ों का आदर करता है।

अध्याय 9

सेर को सवा सेर

पाठ-बोध

उ०1. (क) नहीं, क्योंकि ऐसा समझना, कला का अपमान है।

(ख) क्योंकि साधु उसके जैसा नहीं गा पाये।

(ग) समानता तथा भाईचारा

(घ) संगीत सम्राट तानसेन ने संगीत साधक बैजू को पहचान लिया।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (ii)

उ०3. (क) साधुओं ने आगरा में प्रवेश किया।

(ख) कीर्तन की आवाज पहरेदार के कानों में पड़ी तो वह दौड़ा-दौड़ा आया।

(ग) तानसेन अन्य गायकों से ईर्ष्या करता था क्योंकि तानसेन को अपने संगीत पर घमंड था।

(घ) दरबार की अनुचित आज्ञा सुनकर किशोर बैजू ने मन-ही-मन प्रतिज्ञा की, कि वह तानसेन का घमंड जरूर तोडेगा।

(ङ) तानसेन ने गाना शुरू किया। जब संगीत थमा तो सभी ने देखा, बर्तन में रखा पत्थर मोम की तरह पिघल रहा है। संगीत का जादू समाप्त हुआ तो पत्थर धीरे-धीरे ठंडा होकर जम गया।

(च) जब बैजू ने कहा कि तानसेन ने संगीत को अपनी जायदाद समझ लिया था। यह संगीत का अपमान है। मैंने उसी अपमान का कलंक धोया है। यह सुनकर तानसेन बैजू के कदमों में झुक गया।

व्याकरण-बोध

उ०1. मधुर आवाज = मधुर भयभीत साधु = भयभीत

सच्चा गुरु = सच्चा कीमती गहने = गहने

उ०2. (क) अब तो गंगा नदी का जल भी अशुद्ध हो गया है।

(ख) चंद्रमा भी कलंक रहित नहीं है।

(ग) मुझे विश्वास है कि यह कार्य हरि के चाचा ने ही किया है।

(घ) हमें अनुचित बात का विरोध करना चाहिए।

उ०3. (क) खून खोल उठना – शिष्य को चोरी करते देख गुरु जी का खून खौल उठा।

(ख) अवाक् रह जाना – महल में हिरनों को देखकर सब अवाक् रह गए।

(ग) सिर लटका लेना – अपनी हार पर तानसेन ने सिर लटका लिया।

(घ) धुन सवार होना – बैजू को संगीत सीखने की धुन सवार हो गई।

उ०4.

साधु	= चोर	मधुर	= कटु
राजा	= रंक	गुरु	= शिष्य
निर्मल	= गंदा	आनंद	= शोक
समाप्त	= प्रारम्भ	अपमान	= मान
संतोष	= असंतोष	धीरे	= तेज

अध्याय 10

भारत का लाल– लाल बहादुर

पाठ-बोध

उ०1. (क) लाल बहादुर का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगलसराय में हुआ था।

(ख) लाल बहादुर पढ़ने में बहुत अच्छे थे।

(ग) लाल बहादुर ने नदी तैरकर पार करने का निश्चय किया क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे।

(घ) देश की सेवा करने का।

(ङ) 16-17 साल के।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) माली की इस बात ने नन्हें के दिल पर प्रभाव छोड़ा माली ने कहा– ''बेटे तुम्हें बिल्कुल शरारत नहीं करनी चाहिए। तुम्हें अच्छी-अच्छी आदतें सीखकर अच्छा आदमी बनना चाहिए ताकि आगे चलकर तुम्हारी माँ को तुम्हारा सहारा मिल सके।''

(ख) पिता का नाम था मुंशी शारदा प्रसाद वर्मा और माँ का नाम था रामदुलारी देवी।

(ग) मल्लाह ने कहा– अगर मुफ्त में तुम नहीं चलना चाहते हो तो उधार ही सही। अभी तो तुम नाव से चले चलो, पैसे बाद में किसी दिन दे देना।

(घ) लाल बहादुर ने एक हाथ में किताब-कापियाँ सँभालकर ऊपर उठा रखी थीं, जिससे वे भीगने से बची रहें और दूसरे हाथ से पानी को काटते हुए वह तेज़ी के साथ दूसरे किनारे की ओर बढ़ने लगा।

(ङ) लाल बहादुर ने कहा, ''सोचो भला माँ, मल्लाह भी तो आखिर गरीब आदमी है न। मेहनत-मज़दूरी करके किसी तरह अपना और अपने घरवालों का पेट पालता है। उसकी नाव पर मुफ्त सफर करना तो बुरा काम है।

(च) यह सारा कांड सुनकर लालबहादुर का मन छटपटा उठा। उन्होंने उसी समय तय कर लिया कि वह भी आजादी की लड़ाई में शामिल होंगे और देश को आजाद कराने के लिए जरूरत पड़ी तो अपनी जान भी दे देंगे।

(छ) तुम्हारे जैसे लोग ही देश की सच्ची सेवा कर सकते हैं। ऐसे लोग ही भविष्य में इस देश के सच्चे रत्न कहे जाएँगे।

व्याकरण-बोध

उ०1. छोटा = बड़ा खुश = नाराज
नाटा = लंबा प्यार = नफरत
करीब = दूर गरीब = अमीर

उ०2. रही बात उधारी की, सो वह भी गंदी आदत है। जो अच्छी बातें सोचता है, वही तरक्की करता है। जिन दिनों लालबहादुर हाईस्कूल में पढ़ रहे थे, उन्हीं दिनों एक रोज वाराणसी में महामना मदनमोहन मालवीय जी ने भाषण दिया। उस समय देश के नेता मिल-जुलकर जो तय करेंगे, वैसा ही तुम भी करना। अंग्रेज सरकार के साथ असहयोग किया जाए, यानी सरकार को किसी भी काम में मदद न दी जाए।

उ०3. (क) आग-बबूला होना = जलियावाला बाग का कांड सुनकर नन्हें आग-बबूला हो गया।

(ख) पहाड़ टूट जाना = पिता की मृत्यु के बाद नन्हें की माँ पर मुसीबतों का पहाड़ टूट गया।

(ग) दंग रह जाना = लाल की आँखों में देश प्रेम देखकर मास्टर जी दंग रह गए।

(घ) गुजर-बसर करना = नन्हें व उसकी माँ का गुजर-बसर बड़ी मुश्किल से हो रहा था।

(ङ) पेट-पालना = लाल का पेट-पालना उसकी माँ के लिए बहुत मुश्किल हो गया था।

व्याकरण-बोध

- नीचे दी गई वर्ग-पहेली में से महापुरुषों के नाम ढूँढ़िए–

ला	रा	जा	रा	म	मो	ह	न	रा	य
ल	जें	वि	वे	का	नं	द	प	तु	म
ब	द्र	अ	द	ल	ला	क	म	ल	हा
हा	प्र	ड	क	म	ले	धी	ल	दा	त्मा
दु	सा	वे	मि	ल	क	ग	त	सी	गाँ
र	द	लो	क	मा	न्य	ति	ल	क	धी
शा	क	स	र	दा	र	प	टे	ल	द
स्‍	फ	श्री	ल	म	द	र	सा	र	ट
त्री	रा	म	कृ	ष्ण	प	र	म	हं	स
ज	वा	ह	र	ला	ल	ने	ह	रू	ल

अध्याय 11

हमारी अमूल्य संपदा– वन

पाठ-बोध

उ०1. (क) प्रकृति से

(ख) हमारे चारों और का वातावरण ही पर्यावरण है।

(ग) मानव का पर्यावरण से घनिष्ठ संबंध है। मानव हर प्रकार से पर्यावरण पर निर्भर है।

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०3. (क) घनिष्ठ (ख) वनों (ग) वृक्षों

(घ) जड़ें (ङ) सुखी, सुविधापूर्ण

उ०4. (क) अथर्ववेद में वनों को समस्त सुखों का स्रोत कहा गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने वृक्ष को ईश्वर की विभूति कहकर उसका महत्व स्पष्ट किया है। अग्निपुराण में वृक्षों को काटना निषेध किया गया है क्योंकि वे परिवार की सुख-समृद्धि के आधार हैं। मत्स्यपुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर बताया गया है। अतएव वृक्षों की रक्षा और उनका संवर्धन मानव-जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए परमावश्यक है।

(ख) वृक्ष कई प्रकार से हमारे काम आते हैं। जड़ से लेकर तना, शाखाएँ, छाल, फल, फूल, बीज आदि सभी हमारे जीवन के लिए उपयोगी हैं। उनकी लकड़ी घरेलू उपयोग के सामान बनाने तथा ईंधन के काम आती है। पेड़-पौधे वातावरण की अशुद्ध एवं हानिकारक वायु को स्वयं पचा लेते हैं और वायु को शुद्ध रखते हैं। ये भूमि को अधिक तप्त होने से रोकते हैं। यदि भू-तल पर वृक्ष न होते तो पृथ्वी का तापमान बढ़कर इतना अधिक हो जाता कि ध्रुवीय प्रदेशों पर जमी बर्फ भी पिघल जाती। वन-उपज का उपयोग गृह-निर्माण, मेज-कुर्सी, दरवाजे, खिड़कियाँ, बैलगाड़ी, कृषि-उपकरण, खिलौने, खेल की सामग्री, वाद्य-यंत्र, नौकाएँ, खंभे, पुल, कागज, माचिस आदि बनाने में किया जाता है।

(ग) ये वातावरण में विद्यमान धूल-कणों को कम करते हैं तथा पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में सहायक हैं।

(घ) पेड़-पौधों को 'हरा सोना' कहा जाता है। अंतर सिर्फ इतना है कि सोना (धातु) खान के भीतर मिलता है, जबकि हरा सोना (वृक्ष) खुली भूमि पर सुलभ हैं।

(ङ) वृक्षों के संवर्धन हेतु जहाँ नहरों तथा सड़कों का निर्माण किया गया है, उनके किनारे वृक्ष लगाए जा सकते हैं। सड़कों के किनारे वृक्ष होने से जहाँ वायुमंडल का संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलेगी, वहीं यात्रियों को शीतल छाया भी सुलभ होगी।

व्याकरण-बोध

उ०1. सर्वाधिक = सर्व+अधिक
विद्यार्थी = विद्या+अर्थी
अत्यावश्यक = अति+आवश्यक
योजनावधि = योजना+अवधि
संवर्धन = सम्+वर्धन
इत्यादि = इति+आदि

उ०2. एक = प्रत्येक
अधिक = सर्वाधिक
वक्त = बेवक्त
ईमान = बेईमान
पुत्र = सुपुत्र
फल = विफल

अध्याय 11

अमर शहीद भगत सिंह के पत्र

पाठ-बोध

उ०1. (क) क्रान्तिकारी।

(ख) अंग्रेज अफसर की गोली मारकर हत्या करने के कारण उन्हें फाँसी दी गई।

(ग) देश भक्ति एवं दृढ़ता का

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (iii)

उ०3. मुझे यह **जानकर** कि एक दिन तुम **माँ जी** को साथ लेकर आए और **मुलाकात** का आदेश नहीं मिलने से **निराश होकर** वापस लौट गए, **बहुत दुख** हुआ। तुम्हें तो पता चल चुका था कि **जेल** में मुलाकात की **इजाजत** नहीं देते। फिर **माँ जी** को साथ क्यों लाए? मैं जानता हूँ कि इस समय वे बहुत **घबराई** हुई हैं, लेकिन इस **घबराहट** और **परेशानी** का क्या **फायदा**, नुकसान **जरूर** है, क्योंकि जब से मुझे पता चला कि वे बहुत **रो रही हैं**, मैं स्वयं भी **बेचैन** हो रहा हूँ। **घबराने** की कोई बात नहीं, फिर इससे कुछ **मिलता** भी नहीं।

उ०4. (क) उनके भाई माँ जी को साथ लेकर आए और मुलाकात का आदेश नहीं मिलने से निराश होकर वापस लौट गए, यह भगत सिंह के दु:ख का कारण था।

(ख) हालात से मुकाबला करने के लिए उन्होंने अपने भाई से कहा क्योंकि दुनिया में दूसरे लोग भी तो हजारों मुसीबतों में फँसे हुए हैं, और फिर अगर लगातार एक बरस तक मुलाकातें करके भी तबीयत नहीं भरी तो और दो-चार मुलाकातों से भी तसल्ली न होगी।

(ग) अपने जीने की इच्छा के सिलसिले में भगत सिंह के विचार थे जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, मैं इसे छिपाना नहीं चाहता, लेकिन मैं एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद होकर या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता।

(घ) आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक-चिह्न मद्धिम पड़ जाएगा या संभवत: मिट ही जाए लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगत सिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश की आजादी के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी।

(ङ) भगत सिंह को अपने ऊपर गर्व का अनुभव हो रहा था क्योंकि वे आज अपने देश व मानवता के लिए कुछ ऐसा करने वाले थे, जिससे आजादी की क्रान्ति और तेज होने वाली थी।

(च) उन्होंने 'शैतानी शक्तियों' शब्दों का प्रयोग अंग्रेजों के लिए किया क्योंकि वे हमारे देश पर अपना कब्जा कर रहे थे।

व्याकरण-बोध

उ०1. कुर्बानी = न्यौछावर तमाम = सारा
नुकसान = क्षति आरजू = तमन्ना
इजाजत = आज्ञा आजादी = स्वतंत्रता
मुलाकात = मिलना हसरत = इच्छा

उ०2. दुनिया = जग संसार
माता = माँ जननी
साहस = वीरता बहादुरी
इच्छा = हसरत आरजू
दिन = दिवस वार
साथी = सहयोगी सहचर

उ०3. वीर = गुणवाचक विशेषण
अनेक = संख्यावाचक विशेषण
अंतिम = गुणवाचक विशेषण
दो-चार = संख्यावाचक विशेषण
हिन्दुस्तानी= गुणवाचक विशेषण

उ०4.

सर्वनाम	**कारक चिन्ह**
मेरी, अपने	जनता के, बच्चों के
मैं	फाँसी से, आजादी के लिए
वे	क्रान्ति का, क्रान्ति की, चढ़ने की
मेरे	ढंग से, बूते की बात

उ०5. (क) निराश = माँ से न मिलने पर भगतसिंह निराश हो गये।

(ख) इजाजत = भगतसिंह से मिलने की इजाजत माँ को नहीं मिली।

(ग) मुलाकात= जल में भगतसिंह की किसी से मुलाकात नहीं हुई।

(घ) पाबंद = भगतसिंह पाबंद होकर नहीं जीना चाहते थे।

(ङ) प्रतीक = आजाद क्रान्ति के प्रतीक को मद्धिम नहीं होना देना चाहते थे।

(च) तमाम = आजादी पाने के लिए तमाम प्रयास किये गये।

अध्याय 13

मुक्ति की आकांक्षा

कविता-बोध

उ०1. (क) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

(ख) बड़ी है, निर्मम।

(ग) पानी व दाने के लिए।

(घ) पर्याप्त भोजन।

(ङ) बिना संघर्ष का स्वर।

(च) पिंजरा खुलने या टूट जाने पर

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) चिड़िया को लाख समझाओ
कि पिंजड़े के बाहर
धरती बहुत बड़ी है, निर्मम है,
वहाँ हवा में उन्हें
अपने जिस्म की गंध तक नहीं मिलेगी।

(ख) बाहर बहेलिये का डर है,
यहाँ निद्वंद्व कंठ-स्वर है।
फिर भी चिड़िया
मुक्ति का गाना गाएगी,

उ०4. प्रसंग– प्रस्तुत कविता में कवि चिडिया की मन की स्थिति को दर्शा रहे हैं।

भावार्थ– कवि कहते हैं कि चिड़िया को कितना भी समझाया जाये कि बाहर की दुनिया बड़ी बेदर्दी है, यहाँ कोई किसी का भला नहीं चाहता, सब अपने भले में लगे हैं। परन्तु वह नहीं समझेगी। पिंजड़े से बाहर निकलने पर वह कब किसका शिकार बन जायेगी उसे स्वयं को मालूम नहीं पड़ेगा।

उ०5. (क) कवि ने पिंजड़े के बाहर की दुनिया को निर्मम बताया क्योंकि बाहर न तो कोई उसे पीने को जल देगा और न ही खाने को दाना। साथ ही यहाँ उसे अपनी सुरक्षा भी स्वयं ही करनी होगी।

(ख) चिड़िया को पिंजड़े में खाने, पीने की सुविधाएँ प्राप्त हैं।

(ग) चिड़िया मुक्ति का गाना ही गाएगी क्योंकि आजादी की चाह सभी भौतिक सुविधाओं से महत्वपूर्ण होती है।

(घ) इस कविता का मूल स्वर आजादी है।

व्याकरण-बोध

उ०3. (क) चिड़िया = खग विहग

(ख) हवा = वायु पवन

(ग) समुद्र = सागर जलधि

(घ) धरती = भू धरा

(ङ) जिस्म = शरीर काया

(च) जल = पानी नीर

(छ) नदी = नहर सरिता

(ज) आकाश = नभ गगन

उ०2. (क) निर्मम = कवि पिंजरे के बाहर की निर्मम स्थिति के बारे में बताते हैं।

(ख) गंध = हवा में आजादी की गंध है।

(ग) झरना = झरने का पानी साफ है।

(घ) मुक्ति = चिड़िया पिंजरे से मुक्ति चाहती है।

(ङ) आशंका = चिड़िया को पिंजरे के बाहर मृत्यु की आशंका है।

(च) अंग = हमारे प्रत्येक अंग की एक महत्ता है।

(छ) बाहर = बाहर जंगल में अनेक जानवर हैं।

अध्याय 14
ऐसी वाणी बोलिए

कविता-बोध

उ०1. (क) भाषा (ख) मधुर वचन
(ग) मनुष्य की शिष्टता तथा मधुर वाणी

उ०2. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०3. (क) कनक-घटों का अर्थ है सोने का घड़ा। विश्व में विषभरे सोने के घड़ों की कमी नहीं है। अर्थात् संसार में बहुत से लोग हैं जो ऊपर से अच्छाई का दिखावा करते हैं परन्तु अन्दर ही अन्दर सभी का बुरा चाहते हैं। वे अपने अलावा किसी के हितैषी नहीं होते।

(ख) हृदय से बुरे लोगों की वाणी कभी भी मधुर नहीं हो सकती। वाणी में मधुरता केवल उन्हीं व्यक्तियों की होती है जो हृदय से साफ होते हैं जो सभी का भला चाहते हैं वही हृदय से कोमलता और वाणी में मधुरता रखते हैं।

उ०4. (क) भाषा के कारण मनुष्य उत्तरोत्तर उन्नति करता चला आया है। अन्य जानवरों की अपेक्षा मनुष्य भौतिक बल में न्यून होते हुए भी अपनी बुद्धि और भाषा के सहारे सबसे अधिक सबल हो गया है। भाषा द्वारा हमारे ज्ञान और अनुभव की रक्षा होती है।

(ख) भाषा द्वारा मनुष्य की सामाजिकता कायम है। एक मधुर शब्द दो रूहों को मिला देता है और एक ही कटु शब्द दो मित्रों के मन में वैमनस्य उत्पन्न कर देता है। वचनों का माधुर्य हृदय-द्वार खोलने की कुंजी है।

(ग) एक ही बात को हम कर्णकटु शब्दों में कहते हैं और उसी को हम मधुर बना सकते हैं। बाणभट्ट जब मरने वाले थे तब यह प्रश्न उठा कि उनकी अधूरी 'कादंबरी' कौन पूरी करेगा? उन्होंने अपने दोनों लड़कों को बुलाया और उनसे पूछा कि सामने जो सूखा वृक्ष खड़ा है उसको तुम किस प्रकार अपनी भाषा में व्यक्त

करोगे? बड़े लड़के ने कहा, 'शुष्कम काष्ठम तिष्ठत्यग्रे।' छोटे लड़के ने कहा, 'नीरस तरुवर विलसति परतः।' बात एक ही थी, कहने में फर्क था। बाणभट ने अपने छोटे लड़के को ही पुस्तक पूरी करने का भार सौंपा। तभी तो तुलसीदास ने कहा है–

''कोयल काको देत है कागा कासो लेत।
तुलसी मीठे वचन ते जग अपनो करि लेत।। ''

विष-भरे कनक-घटों की संसार में कमी नहीं है। कटु-भाषी लोगों से लोग हृदय खोलकर बात करने से डरते हैं। सामाजिक व्यवहार के लिए विचारों का आदान-प्रदान आवश्यक है और वह भाषा की शिष्टता और स्पष्टता के बिना प्राप्त नहीं होता है।

(घ) मधुर वचनों के साथ यह भी आवश्यक है कि उनके पीछे भाव भी शिष्ट-मधुर हों, नहीं तो मुलम्मे के सिक्कों की भाँति बेकार रहेंगे। हृदय की मलिनता और मधुर वचनों का योग नहीं हो सकता है। वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं, तभी मनुष्य वंद्य बनता है।

(ङ) वाणी की मधुरता के साथ विनयपूर्वक व्यवहार की भी आवश्यकता है। विनयपूर्ण व्यवहार ही शिष्टाचार है। शिष्टाचार का अर्थ लोग दिखावा या तकल्लुफ करते हैं। लेकिन वास्तव में उसका अर्थ है– सज्जनोचित व्यवहार। मधुर भाषण के साथ इसका भी मूल्य है। इनके द्वारा मनुष्य की शिक्षा-दीक्षा तथा कुल की परंपरा और मर्यादा का परिचय मिलता है। शिष्टाचार वाणी का भी होता है और व्यवहार का भी।

व्याकरण-बोध

उ०1. द्रवित = इत
शिष्टता = ता
आत्मीयता= ता
साहित्यिक = इक
वांछनीय = नीय
आर्थिक = इक

उ०2. यथेष्ट = यथा+इष्ट स्वाभिमान = स्व+अभिमान
वार्तालाप = वार्ता+आलाप मनोनुकूल = मन+अनुकूल

उ०3.

भाषा	= स्त्रीलिंग	उन्नति	= स्त्रीलिंग
भाषण	= पुल्लिंग	हृदय	= पुल्लिंग
मर्यादा	= स्त्रीलिंग	शिष्टाचार	= पुल्लिंग
बुद्धि	= स्त्रीलिंग	प्रश्न	= पुल्लिंग
वृक्ष	= पुल्लिंग	आदर	= पुल्लिंग
चित्त	= पुल्लिंग	शिक्षा	= स्त्रीलिंग

उ०4. (क) भाषा = भाषा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है।
(ख) उन्नति = उन्नति में मधुर भाषा बहुत सहायक है।
(ग) शिष्टता = शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है।
(घ) प्रकट = रहस्यों को अनजान व्यक्ति के सामने प्रकट नहीं करना चाहिए।
(ङ) गुण = मधुर भाषा बोलना बहुत अच्छा गुण है।
(च) भार = पिताजी पर पूरे परिवार के लालन-पालन का भार होता है।

अध्याय 15

मालव-प्रेम

पाठ-बोध

उ०1. (क) आज से लगभग 2100 वर्ष पूर्व का है।
(ख) उसे देश-प्रेम तथा प्रेम में चुनाव करना है।
(ग) मालव जाति का वंशाभिमान
(घ) स्वयंवर चुनने का तथा जातिगत भेद दूर करने का

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य
(घ) असत्य (ङ) सत्य

उ०4. (क) श्रीपाल को जब जयदेव ने लज्जित किया तब उसने शत्रु से हाथ मिला लिया क्योंकि वह एक किसान पुत्र है तो अपने अपमान का बदला लेने के लिये वह शत्रु की ओर चला गया ताकि उनसे मिलकर वह अपने अपमान का बदला जयदेव और मालवा से ले सके।
(ख) प्रेम का समर्पण करना बहुत ही हिम्मत की बात है परन्तु जब प्रेम का समर्पण देशहित के लिए किया जाये तो यह गर्व की बात है। यह तब प्रेमी व प्रेमिका का प्रश्न नहीं है बल्कि यह देश का प्रश्न है।

उ०5. (क) विजया ने श्रीपाल को अशिष्ट कहा क्योंकि श्रीपाल चुपचाप विजया के पीछे खड़ा होकर उसका गाना सुन रहा था।
(ख) श्रीपाल ने बदला लेने के लिए दुश्मन से हाथ मिला लिया।
(ग) जयदेव ने श्रीपाल के लिए मृत्यु दंड सोचा।
(घ) मानव का सबसे बड़ा पतन पराधीनता है।
(ङ) विजया श्रीपाल को बंदी बनवाती है ताकि वह अपने देश, अपनी मातृभूमि की दुश्मनों से रक्षा कर सके।

व्याकरण-बोध

उ०1.

काँटा	–	काँटेदार	शानदार	हवादार
मजा	–	मजेदार	दुकानदार	जमींदार
किराया	–	किरायेदार	मसालेदार	चौकीदार

उ०2. (क) होशियार लड़के होकर काम से जी चुराते हो।
(ख) सिपाही होकर युद्ध से डरते हो।
(ग) अच्छे परिवार के होकर ऐसा काम करते हो।
(घ) आप अच्छे खिलाड़ी होकर भी बच्चे से हार गये।
(ङ) आदमी होकर भी चूहों से डरते हो।

उ०3. (क) तुम्हें शोभा नहीं देता।
(ख) शोभा नहीं देता।
(ग) तुम लोगों को शोभा नहीं देता।
(घ) तुम लोगों को शोभा नहीं देता।

उ०4. (क) (v) (ख) (iii) (ग) (iv)
(घ) (ii) (ङ) (i)

उ०5. (क) कोमल – तेजपाल जी की पुत्री का नाम कोमल है।
(ख) क्रोध – राघव को छोटी-छोटी बातों पर क्रोध आ जाता है।
(ग) प्रेरणा – माता-पिता अपने बच्चों के लिए प्रेरणा होते हैं।
(घ) विद्रोह – विद्रोह किसी भी समस्या का हल नहीं है।
(ङ) अपमान – राघव ने विनय का अपमान किया।
(च) क्रोध – क्रोध में व्यक्ति अपना धैर्य खो देता है।
(छ) शस्त्र – महाभारत में कई प्रकार के अस्त्र-शस्त्र प्रयोग हुए थे।
(ज) युद्ध – युद्ध में बहुत से सैनिक मारे जाते हैं।

अध्याय 16

आर्य भट्ट

पाठ-बोध

उ०1. (क) आकाश में सुशोभित तारों की सुंदरता के कारण।

(ख) आर्यभट्ट का।

(ग) 476 ईसा पूर्व, अश्मक जनपद में।

(घ) ज्योतिषशास्त्र, गणित।

(ङ) आर्यभट्टीय।

(च) संस्कृत भाषा में।

(छ) चार भागों में।

उ०2. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3. (क) अंतरिक्ष यात्री (ख) ज्योतिष विद्या (ग) पाटलीपुत्र

(घ) पद्य (ङ) दूरबीन

उ०4. (क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

(घ) असत्य (ङ) असत्य

उ०5. (क) मगर आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम संसार को बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर परिक्रमा करती है। उन्होंने स्पष्ट रूप से चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण का कारण बताया। उन्होंने बताया कि चंद्रमा और पृथ्वी की परछाईं पड़ने से ग्रहण होता है। पृथ्वी की छाया जब चंद्रमा पर पड़ती है तो चंद्रग्रहण होता है और चंद्रमा की छाया जब पृथ्वी पर पड़ती है तो सूर्यग्रहण होता है। उन्होंने आज से हजारों वर्ष पूर्व यह ज्ञान दिया कि चंद्रमा स्वयं नहीं चमकता अपितु सूर्य के प्रकाश से चमकता है।

(ख) आर्यभट्ट ने ज्योतिष के अलावा गणितशास्त्र में भी नए-नए सिदधांतों की खोज की। उन्होंने बीजगणित का ज्ञान सर्वप्रथम संसार को दिया। उन्होंने बड़ी-बड़ी संख्याओं को वर्णों के माध्यम से छोटे रूप में लिखने का अद्भुत आविष्कार किया।

(ग) प्राचीनकाल में वृत्त तथा घेरे की जानकारी गणितज्ञों को नहीं थी। इन दोनों के संबंध को निश्चित पूर्णांक में बताना सरल नहीं। आज

से डेढ़ हजार वर्ष पूर्व आर्यभट्ट ने इस अनुपात का अनुसंधान किया तथा बताया कि वृत्त का व्यास दिया हो तो परिधि किस प्रकार ज्ञात की जाए।

(घ) वर्णमाला के सारे अक्षरों के लिए संख्यामान निश्चित कर दिए। इससे बड़ी-से-बड़ी संख्या को सरलता से लिखा जा सकता था। इस तरीके को 'अक्षरांक पद्धति' कहा जाता है।

(ङ) आर्यभट्ट ने ज्योतिष के अलावा गणितशास्त्र में भी नए-नए सिदधांतों की खोज की। उन्होंने बीजगणित का ज्ञान सर्वप्रथम संसार को दिया। उन्होंने बड़ी-बड़ी संख्याओं को वर्णों के माध्यम से छोटे रूप में लिखने का अद्भुत आविष्कार किया। वर्णमाला के सारे अक्षरों के लिए संख्यामान निश्चित कर दिए। इससे बड़ी-से-बड़ी संख्या को सरलता से लिखा जा सकता था। इस तरीके को 'अक्षरांक पद्धति' कहा जाता है। यूनानी लोग भी इसी प्रकार अंकों को लिखा करते थे। हमारे देश में प्राचीनकाल से ही अंकों के लिए चिह्न थे। आर्यभट्ट ने अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित के अनेक सूत्रों के बारे में अपनी पुस्तक में लिखा।

(च) आज विद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला रेखागणित यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड की ज्यामिति पर आधारित है। परंतु आर्यभट्ट ने त्रिकोण की तीन भुजाओं तथा उनके कोणों का अध्ययन किया तथा कोणमिति की नई पद्धति का आविष्कार किया। इसी से यूनानी गणितज्ञों को ज्यामिति का ज्ञान मिला। समय के साथ-साथ यह ज्ञान यूरोप तक फैला। निश्चित रूप से आर्यभट्ट ने गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में जो नए-नए सिद्धांत दिए, उन्हें पढ़कर आज के गणितज्ञ भी उनकी प्रतिभा का लोहा मानते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. सदा = सदैव
प्राचीन = पुराना
पर्याप्त = काफी
उन्नति = तरक्की
जगत = संसार
गहन = अधिक
काल = समय
विशिष्ट = खास

अधिकांश = ज्यादातर

उ०2. जिज्ञासा = जिज्ञासाएँ
सूचना = सूचनाएँ
पुस्तक = पुस्तकें
राशि = राशियाँ
प्रतिभा = प्रतिभाएँ

सर्वप्रथम = सबसे पहले
खोज = खोजें
नदी = नदियाँ
सदी = सदियाँ
परिधि = परिधियाँ
जानकारी = जानकारियाँ

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (v)
(घ) (ii) (ङ) (vi) (च) (iv)

उ०4. जीग्यासा = जिज्ञासा
वैज्ञानीक = वैज्ञानिक
इस्थिर = स्थिर

परयापत = पर्याप्त
नम्रदा = नर्मदा
स्पस्ट = स्पष्ट

उ०5. विशाल = सूक्ष्म
प्राचीन = नवीन
आधुनिक = प्राचीन
उन्नति = अवनति
विशिष्ठ = साधारण
पूर्व = पश्चात्

सुलभ = दुर्लभ
ज्ञान = अज्ञान
पर्याप्त = अपर्याप्त
जन्म = मृत्यु
विरोध = समर्थक
सरलता = जटिलता

उ०6.

चाँद	= शशि	चन्द्रमा	निशाकर
मानव	= इंसान	नर	व्यक्ति
आकाश	= गगन	नभ	आकाश
राजा	= नृप	सम्राट	नरेश
नदी	= नहर	तरंगिणी	सरिता
पृथ्वी	= धरती	धरा	भू
सूर्य	= रवि	भानु	दिनकर
संसार	= जगत	जग	दुनिया

अध्याय 17
पारसमणि

पाठ-बोध

उ०1. (क) भगवान।

(ख) उसने हीरा नदी में फेंक दिया।

(ग) इन दोनों ने ही सारे वैभव तथा धन त्याग कर ज्ञान की शरण ली।

(घ) प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन ने लिखा था, 'आगे आने वाली पीढ़ियाँ मुश्किल से विश्वास कर पाएँगी कि इस धरती पर हाड़-मांस का बना गाँधी-जैसा व्यक्ति भी चलता-फिरता था।

(ङ) धन का खोट आदमी को तब मालूम होता है जब वह अपनी बुराईयों को दूर करता है।

(च) आदम ने देवदूत से कहा– ''भैया मेरा नाम उन लोगों में लिख लेना, जो इंसान की सेवा करते हैं।''

(छ) चालीस लाख एकड़ विनोबा को सेवा के बल पर मिली।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) रवीन्द्रनाथ ठाकुर (ख) भगवान

(ग) सपने में भगवान के दर्शन (घ) मनुष्य

(ङ) रोशनी, धूप (च) विनोबा

उ०5. (क) साधु ने इसे क्यों ही क्यों डाल रखा है? जरूर उसके पास इस हीरे से भी मूल्यवान कोई चीज है, जिसने ऐसी अनमोल चीज को मिट्टी के मोल बना दिया है। यह हीरा तो आज है, कल नहीं। मुझे वही चीज प्राप्त करनी चाहिए जो हीरे को भी ठीकरा कर देती है।

(ख) जिसके पास केवल धन है, उससे बढ़कर गरीब और कोई नहीं क्योंकि उनके जीवन में सहजता नहीं है और जिसके जीवन में उतावली या उलझन है।

(ग) धन-दौलत की दौड़ में आदमी की हालत वैसी ही होती है, जैसे कि रेगिस्तान में भ्रम से दीख पड़ने वाले पानी को देखकर हिरन की होती है। वह उसकी ओर दौड़ता है पर पानी हो तो मिले! बेचारा भटक-भटककर प्यासा ही प्राण दे देता है।

(घ) उन्होंने सारे आडंबर छोड़ दिए। सादगी का जीवन बनाया और बिताया। वह समझ गए थे कि जो आनंद सादगी की जिंदगी में है, वह पैसे की जिंदगी में नहीं। वह चाहते तो अच्छी-खासी कमाई कर सकते थे लेकिन उस हाल में वह गाँधी न होते। उन्होंने पैसे का मोह त्यागा और बड़े-बड़े काम किए। दुनिया में उनका नाम अमर हो गया।

(ङ) सारे प्राणियों में आदमी को ऊँचा माना गया है और वह इसलिए कि आदमी के पास बुद्धि है, विवेक है। संसार में जितनी ईजादें हुई हैं, सब बुद्धि के जोर पर हुई हैं। आप सवेरे दिल्ली में नाश्ता करके चलते हैं और दोपहर का खाना मास्को में खा लेते हैं। हजारों मील की यात्रा घंटों में हो जाती है। यह सब आदमी की बुद्धि से ही संभव हुआ है।

(च) मानवजाति की सेवा करने वाले भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, महात्मा गाँधी, अबू बिन आदम, विनोबा, आइंस्टीन आदि का उदाहरण लेखक ने दिया है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) रवींद्रनाथ ठाकुर की एक बड़ी-ही सीख देने वाली रचना थी।

(ख) पेड़ के नीचे सचमुच बड़ा कीमती हीरा पड़ा था।

(ग) एक महान व्यक्ति ने कितनी बढ़िया बात कही थी।

(घ) लेकिन वह चाहता था कि उसके देशवासी खूब खुशहाल हों।

(ङ) बहुत-से लोग ऐसा भी करते थे, पर यह रास्ता सबका रास्ता नहीं था।

उ०2. (क) बहुत आश्चर्य होना।

राहुल जब कक्षा में प्रथम आया तो सबके अचरज की सीमा न रही।

(ख) बहुत सस्ता बना देना

दुकानदार ने सारे सामान को मिट्टी के मोल बना दिया।

(ग) सुखी रहना

पिता को सरकारी नौकरी मिलते ही परिवार खुशहाल रहने लगा।

(घ) धन कमाने की अधिक लालसा रहना

आजकल सब पैसे की होड़ में व्यस्त रहते हैं।

(ङ) सदा के लिए प्रसिद्ध होना

महात्मा गाँधी जी के महान कार्यों के कारण उनका नाम अमर है।

उ०3.

धन	= धान्य	दिन	= दैनिक
शरीर	= शारीरिक	महान	= महानता
रेगिस्तान	= रेगिस्तानी	बुद्धि	= बुद्धिमान
बुराई	= बुरा	समाज	= सामाजिक

उ०4. (क) सकर्मक (ख) सकर्मक

(ग) सकर्मक (घ) अकर्मक

(ङ) अकर्मक

उ०5.

खुशी	= खुशियाँ	हीरा	= हीरें
ठीकरा	= ठीकरें	घटना	= घटनाएँ
चीज	= चीजें	बुराई	= बुराइयाँ
सभा	= सभाएँ	सीमा	= सीमाएँ

अध्याय 18

श्री कृष्ण की बाललीला

कविता-बोध

उ०1. (क) कृष्ण अपनी मैया यशोदा से रूठ गये और चाँद लेने की जिद करते हैं।

(ख) गायों के पीछे मधुबन में।

(ग) वे कहना चाहते हैं कि उनकी बाँहे मक्खन की हाँडी तक नहीं पहुँच सकती हैं।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) सुरभी, बेनी (ख) बलदेवहिं (ग) भोर

(घ) बरबस (ङ) सूरदास

उ०4. कवि कहते हैं कि प्रस्तुत पंक्तियों में कृष्ण अपनी माता से कहते हैं कि उन्होंने मक्खन नहीं खाया है। वह तो भोर होते ही गायों को चराने के लिए मधुबन ले जाते हैं और चारों पहर बंसी बजाते हुए भटकते फिरते हैं और सायंकाल में घर वापस आते हैं। वे कहते हैं कि वह तो बहुत ही छोटे से बालक हैं वह छीकें तक पहुँचने की विधि कैसे करेंगे। उनका सब ग्वालों से बैर है, वे बेकार में ही उनको फँसाते हैं। हे माता तू तो अति भोली है, तू इन सबके कहने में मत आ। कान्हा कहते हैं कि सबकी बातें सुनकर यदि तेरे मन में कुछ शक पैदा हुआ है तो यह ले अपनी लाठी, इससे तूने मुझसे बहुत से काम करा लिए हैं, मैं अब कोई काम नहीं करूँगा। ये सब बातें सुनकर यशोदा मैया कान्हा जी को प्रेम से गले लगा लेती हैं।

उ०3. (क) यशोदा व नंद। (ख) बलदेव।

(ग) रूकमणि। (घ) द्वापर युग में।

उ०4. (क) कृष्ण मैया से जिद करके केवल नंद बाबा के पुत्र कहलवाने की बात कहते हैं क्योंकि मैया कृष्ण को चंद्ररूपी खिलौना नहीं दे रही हैं।

(ख) मैया कहती है कि वह उनका विवाह करायेंगी और एक नई दुल्हनियाँ उनको लाकर देंगी।

(ग) मैया जब कान्हा के सारे मुख, हाथ, पैर पर माखन लगा हुआ

देखती है तब उनको पता चलता है कि कान्हा माखन चोरी करते हैं।

(घ) माता कान्हा जी की बातों पर विश्वास नहीं करती तब कान्हा स्वयं को पराया कहते हैं।

(ङ) कृष्ण मैया को अपनी लाठी वापिस कर देते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०2.

धरती	= धरती	मैया	= माँ
मक्खन	= माखन	पय	= दूध
चोरी	= चुटिया	सुरभी	= गाय
चंद्र	= चाँद	सुत	= पुत्र

उ०3.

बहियन	= बहन	मुँह	= मुख
मैया	= माँ	पहर	= समय
सिर	= सर	पूत	= पुत्र
धरनि	= धरती	साँझ	= सायं

उ०4. (क) चंद्र = रात को चंद्र की आभा न्यारी होती है।

(ख) पय = गाय का पय बच्चों को जल्दी पचता है।

(ग) सुत = माँ अपने सुत को बहुत प्रेम करती है।

(घ) भोर = भोर में उठना बहुत लाभकारी होती है।

(ङ) विधि = हर कार्य विधिपूर्वक करना चाहिए।

(च) भेद = अपना भेद किसी को बताना नहीं चाहिए।

अध्याय 19

काकी

पाठ-बोध

उ०1. (क) शामू ने देखा कि घर में कुहराम मचा है।

(ख) काकी उसके मामा के घर गई है।

(ग) अपने पिता विश्वेश्वर के कोट से चवन्नी निकालकर पंतग मँगवाई।

(घ) जिसको पकड़कर काकी नीचे उतर सके।

(ङ) शुभ काम में बाधा आ गई क्योंकि कुपित विश्वेश्वर वहाँ आ पहुँचे थे।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०3. (क) कुहराम (ख) दाह-संस्कार (ग) पतंग

(घ) अँधेरे, डोर (ङ) समझदार (च) हैरानी से

उ०4. बारिश के बाद जमीन के ऊपर का पानी सूखने में देर नहीं लगती, लेकिन जमीन के नीचे की नमी बहुत दिनों तक बनी रहती है। वैसे ही शामू के मन में शोक बस गया था। वह अकेला बैठा रहता। खाली मन से आकाश की ओर ताका करता।

उ०5. (क) काकी को जमीन पर देखकर शामू काकी को ले जाते समय शामू ने बड़ा ऊधम मचाया। वह काकी के ऊपर जा गिरा। बोला, "काकी सो रही हैं। उन्हें कहाँ लिए जा रहे हो? मैं न जाने दूँगा।"

(ख) पड़ोस के बालकों से उसे पता चल गया कि काकी ऊपर राम के यहाँ गई है। वह कई दिन तक लगातार रोता रहा। फिर उसका रुदन तो शांत हो गया पर शोक शांत न हो सका।

(ग) शामू पतंग को राम के पास भेजना चाहता था ताकि काकी पतंग के सहारे नीचे उतर आये।

(घ) भोला ने शामू को समस्या बताई कि पर एक कठिनाई है। इसे पकड़कर काकी उतर नहीं सकती। इसके टूट जाने का डर है। पतंग में मोटी रस्सी हो, तो ठीक रहेगा।

(ङ) भोला की बात सुनकर शामू ने रस्सी मँगाने का निश्चय किया। उसने विश्वेश्वर के कोट से एक रुपया निकाला और ले जाकर भोला को दिया। बोला, ''देख भोला, किसी को मालूम न होने पाए। दो बढ़िया रस्सियाँ मँगा दे।

(च) कुपित विश्वेश्वर वहाँ आ घुसे। भोला और शामू को धमकाकर बोले, ''तुमने हमारे कोट से रुपया निकाला है? विश्वेश्वर ने शामू को दो तमाचे जड़कर कहा, ''चोरी सीखकर जेल जाएगा? अच्छा, तुझे आज ठीक से समझाता हूँ।''

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) मचाया – मचवाना
शामू ने बिना बात के हल्ला मचवा दिया।

(ख) देखा – शामू ने पहले भोला से दुकान देखवाई फिर चोरी से सामान मंगवाया।

(ग) भागा – भगाना
शामू को भगवाने में भोला का ही हाथ था।

उ०2. (क) सरल (ख) मिश्र (ग) संयुक्त
(घ) संयुक्त (ङ) मिश्र

उ०3.

दिन	= दिवस	जमीन	= धरती
पत्नी	= संगिनी	बालक	= पुत्र
मौत	= मृत्यु	पानी	= जल
सवेरा	= सुबह	इच्छा	= चाह
सच	= सत्य	उम्र	= आयु
बारिश	= वर्षा	कमरा	= कक्ष

उ०4.

सुबह	= शाम	जमीन	= गगन
बड़ा	= छोटा	ऊपर	= नीचे
दासी	= रानी	बालक	= बूढ़ा

शांत = अशांत उदास = खुश

अंधेरा = प्रकाश कठिनाई = सरलता

ठीक = गलत दिन = रात

उ०5. (क) मैं = हम कल घूमने जायेंगे।

(ख) दासी = राजा के महल में बहुत सी दासियाँ हैं।

(ग) पतंग = बंसत पर हमने बहुत सी पतंगें उड़ायीं।

(घ) रस्सी = झूले में दो रस्सियाँ बाँधी गईं।

(ङ) बात = दोस्त मिलकर बहुत सी बातें करते हैं।

अध्याय 20

भोलाराम का जीव

पाठ-बोध

उ०1. (क) धर्मराज यम के महामंत्री, जीवों के जीने-मरने का रिकॉर्ड

(ख) क्योंकि भोलाराम का जीव उसे चकता दे गया।

(ग) भोलाराम का जीव खोजने के लिए।

(घ) भोलाराम की पेंशन का काम पूरा करने के लिए।

(ङ) पेंशन के कागजों की फाइल में।

उ०2. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०3. (क) रिकार्ड (ख) लापता (ग) चकमा

(घ) पेंशन (ङ) आधार (च) पेंशन

उ०4. (क) धर्मराज ने (ख) यमदूत ने (ग) चित्रगुप्त ने

(घ) चपरासी ने (ङ) नारद ने

(च) भोलाराम के जीव ने

उ०5. (क) चित्रगुप्त ने कहा– ''महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चल रहा है। लोग दोस्तों को कुछ चीज भेजते हैं और उसे रास्ते में ही रेलवेवाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है; राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर बंद कर देते हैं।

(ख) लेखक ने समाज के बड़े वर्गों पर कटाक्ष किया है। इन कटाक्ष करने का आधार रिश्वत न मिलने के कारण भोलाराम को उनकी पेंशन नहीं मिल पा रही थी। जो बाबू उस पेंशन को दे सकता था वह उस दरख्वास्त को पूरी करने के लिए रिश्वत चाहता था।

(ग) ''भोलाराम ने दरख्वास्ते तो भेजी थीं, उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।'' इस पंक्ति का आशय है कि अफसर को रिश्वत नहीं दी गई थी।

(घ) भोलाराम का जीवन अपनी पेंशन की फाइल से चिपका हुआ था क्योंकि दरख्वास्तों में उसका मन लगा है। वह अपनी दरख्वास्ते छोड़कर कहीं नहीं जा सकता।

(ङ) इस कहानी द्वारा लेखक हमें संदेश देना चाहते हैं कि विद्यार्थियों को भ्रष्टाचार, रिश्वत आदि बुराइयों से दूर रहना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०1. जाने बिना = बिना जानकर
हाथ-ही-हाथ में = हाथों हाथ
शक्ति के अनुसार = यथाशक्ति
हर मास = मासिक
जैसा संभव हो = यथासंभव
जन्म-भर = जीवनपर्यन्त
बिल्कुल बीच में = मध्यस्थ
बिना मतलब के = बेमतलब

उ०2. (क) नगण्य = तुच्छ
आजकल भावनाओं का महत्व पैसे के आगे तुच्छ हो गया है।

(ख) व्याप्त = मौजूद
महामारी के समय सब जगह असमंजस का माहौल व्याप्त था।

(ग) मौखिक = मूलभूत
इस पाठ में लेखक के विचार बहुत ही मौलिक हैं।

(घ) वैरागी = विरक्त
साधु वैरागी जीवन जीते हैं।

(ङ) विकृत = जिसका रूप बिगड़ गया हो
दुर्घटना के बाद उसकी कार की दशा विकृत हो गई।

(च) रिश्वत = फिरौती
रिश्वत देना व लेना दोनों अपराध हैं।

उ०3.

देह	= काया	शरीर	हुक्म	= आदेश	आज्ञा
वीणा	= तार वाद्य	तंत्री	मृत्यु	= मरण	मौत
मूर्ख	= बेवकूफ	अज्ञानी	स्वर्ग	= जन्नत	देवलोक

उ०4. (क) गाँधी जी का नाम सबने सुना है।
(ख) कृति ने अपना काम खत्म कर दिया।
(ग) विनय तुम यह कार्य अभी मत करो।
(घ) क्या साहिल पुस्तक पढ़ चुका?
(ङ) क्या आज वर्षा होगी?

उ०5. (क) वाह! (ख) ओह! (ग) अरे!
(घ) अरे! (ङ) हाय राम! (च) ओह!
(छ) वाह! (ज) हे भगवान!

उ०6.

उर्दू	हिंदी	अंग्रेजी	हिंदी
दरख्वास्त	आवेदन	पेंशन	सेवानिवृत्ति वेतन
अर्जी	आवेदन	फाइल	पत्रावली
कागजात	पत्र	अफसर	अधिकारी
फुर्सत	समय	पोस्टमैन	डाकिया
मामला	विषय	ऑर्डर	आदेश
गुजारा	अतीत	विजिटिंग कार्ड	परिचय पत्र

उ०7.

व्याप्त	=	उपस्थिति	नगण्य	=	कुछ नहीं
वैरागी	=	विरक्त	विकृत	=	जिसका रूप बिगड़ गया हो
अभ्यस्त	=	आदी	व्यंग्य	=	कटाक्ष
दरख्वास्त	=	अर्जी	दयानिधान	=	दया के सागर
परिश्रम	=	मेहनत	विशेष	=	खास

उ०8. (क) तीव्र = हवाई जहाज बहुत तीव्र गति से चलता है।
(ख) नगर = हमारा नगर बहुत खूबसूरत है।
(ग) ब्रह्मांड = ब्रह्मांड में बहुत से तारे हैं।
(घ) तलाश = भोलाराम पेंशन की तलाश में कागजात में अटक गये।
(ङ) कोशिश = कोशिश करने वालों को हमेशा सफलता मिलती है।
(च) प्रसन्नता = मेरी जीत की प्रसन्नता में माँ ने सबको लड्डू बाँटे।

अध्याय 21

अमरनाथ की यात्रा

पाठ-बोध

उ०1. (क) साढ़े चौदह हजार फीट।

(ख) उनका सामन चोरी हो गया था।

उ०2. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०3. (क) मौत, साक्षात्कार (ख) चोटी, ट्टटू

(ग) जाको राखे साईयाँ (घ) बस, हरियाली (ग) मात्रा-कार्यालय

उ०2. (क) (i) अमरनाथ की यात्रा के सम्बन्ध में।

(ii) लेखक को यात्रा से पहले लोगों ने क्या बता दिया था कि जैसे-जैसे आप ऊपर जाएँगे, ऑक्सीजन की कमी होती जाएगी और साँस लेने में तकलीफ बढ़ती जाएगी।

(iii) जब मन में उत्साह होता है तो न आक्सीजन की भावी कमी का अहसास सताता है और न डर लगता है।

(ख) (i) यात्रा के दौरान लेखक को घोड़ा दुलत्ती लगाकर भागने लगा।

(ii) लेखक के मन में धर्म के प्रति आस्था बढ़ गई क्योंकि ईश्वर की कृपा से उनकी जान बच गई।

(iii) इस घटना से पूर्व लेखक का सोचने था कि तीर्थ करते समय यदि प्राण जाएँ तो आदमी सीधे बैकुंठ जाता है।

उ०5. पहलगाम की नदी जो साँप से तेजी, शेर सी गर्जन अपने में समाकर रखती थी। अल्हड़पन और उसका सफेद बहाव सबका मन मोह लेने का हुनर रखता था। लेखक का कहना सही है कि उस जैसी खूबसूरत नदी आसानी से देखने को नहीं मिलती।

उ०6. (क) नंदन जी के आग्रह पर लेखक ने अमरनाथ यात्रा का कार्यक्रम बनाया।

(ख) लेखक ने महागुनस की चोटी पर पहुँचने के लिए घोड़ा लिया क्योंकि उन्हें साँस लेने में तकलीफ हो रही थी और शरीर की हड्डियाँ साथ छोड़ रही थीं।

(ग) 'वेरीनाग' की सुंदरता के विषय में लेखक ने लिखा है वहाँ चिनार के घने पेड़ और खूबसूरत बगीचा था। यह झेलम का उद्‌गम स्थल है और कुंड को चारों तरफ से पक्का बाँध दिया गया है, चिनाब के पानी के बिल्कुल विपरीत स्वच्छ निर्मल पानी का कुंड है।

(घ) 'छड़ी मुबारक' श्रीनगर के शंकराचार्य मंदिर में प्रस्थापित शिवलिंग का प्रतीक है और अमरेश्वर शिव से श्रावणी पूर्णिमा को गुफा में जाकर सबसे पहले उन्हीं का मिलन होता है।

(ङ) कथा के अनुसार, एक बार काम-क्रीड़ा और खेल की बातों में भगवान श्री सदाशिव का मुख श्री पार्वती जी के नेत्रों के साथ लग गया। नतीजा यह हुआ कि उनका मुख अंजन के कारण काला हो गया। भगवान सदाशिव ने अपने मुख को काला देखा, तो उसे श्री गंगा (नीलगंगा) में धोया, जिससे गंगा जी का रंग काला पड़ गया। इस जल के स्पर्श से महापापों का नाश हो जाता है। नीलगंगा के नीले होने का यह धार्मिक रहस्य जानकर हिसाब लगाया कि पहलगाम में लिद्‌दर (लंबोदरी) की खूबसूरती का रहस्य नीलगंगा की यही नीलिमा है।

व्याकरण-बोध

उ०1. जो आस्था रखे — आस्तिक
जो व्यक्ति भ्रमण को निकला हो — यात्री
घर से बाहर भोजन करने का स्थान — भोजनालय
आमने-सामने हुई बातचीत — संवाद

उ०2.

निर्मल	जल	असाधारण	व्यक्तित्व
खूबसूरत	पहाड़ी	व्यक्तिगत	बातें
श्रद्‌धावान	लोग	साहसिक	कार्य

उ०3. (क) अत्यधिक संकट आना।

तेज बारिश ने पूरे गाँव पर कहर बरपा दिया।

(ख) चकित रह जाना

अपनी पसंदीदा फिल्म का ट्रेलर देखकर, तो लेखक देखता ही रह गया।

(ग) परवाह न करना

लेखक के शोर मचाने पर भी टट्टू चलाने वाले के कान पर जूँ नहीं रेंगी।

(घ) वीरान

गाँव में बारिश के बाद सब कुछ सूना हो गया।

उ०4. (क) आमना-सामना

अमरनाथ में लेखक का ईश्वर से साक्षात्कार होने से बच गया।

(ख) ईश्वर

परमात्मा सब पर दृष्टि रखते हैं।

(ग) सुनसान

शीत में रात का सन्नाटा अत्यधिक भयानक लगता है।

(घ) बहादुरी

लेखक ने यात्रा में साहसिक चढ़ाई करी।

(ङ) आरामदायक छाया

गर्मियों में पेड़ों की शीतल छाँव सारा पसीना चुटकियों में सुखा देती है।

अध्याय 22
मैंने तैरना सीखा

पाठ-बोध

उ०1. (क) गंगा, यमुना। (ख) काशी नगरी में।
(ग) रासलीला। (घ) पूजा के।
(ङ) मई का महीना।

उ०2. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०3. (क) काव्यकला (ख) गुरु (ग) व्यायाम
(घ) हाथ-पैर (ङ) लाल सागर (च) घाट

उ०4. (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य
(घ) सत्य (ङ) असत्य

उ०5. (क) तैरने की कला की अन्य कलाओं से भिन्न है। कवि न होकर भी काव्यकला का ज्ञान आपको हो सकता है। तानसेन न होने पर भी संगीत की बारीकी आप समझ सकते हैं, किंतु तैरने की सब टेकनीक जानने के बाद भी यह आवश्यक नहीं कि आप तैर सकें।

(ख) लेखक के भाषण के विषय में विचार है कि भाषण देने की बीमारी बहुत व्यापक है, रक्तचाप रोग के समान। वह समझ गया कि संसार के सारे रोग दूर हो सकते है। देशों की आपसी लड़ाई बंद हो सकती है। चंद्रमा पर धान की खेती हो सकती है, किंतु भाषण देना बंद नहीं हो सकता है।

(ग) लेखक ने वाराणसी की विशेषताएँ बताईं कि यहाँ की मिट्टी दूसरे जन्म में सोना हो जाती है और यहाँ कपड़ा कम पहनिए तो महाजन और न पहनिए तो देवता हो जाइए। यहाँ गंगा का वही महत्व है, जो सरकारी कागजों पर 'साइन' का, विवाह में 'नाइन' का तथा रेलवे में 'लाइन' का।

(घ) पुराने जमाने में रोम के थियेटर के मंच के चारों ओर सीढ़ियाँ बनी रहती थीं, जिन पर साधारण लोग बैठकर तमाशा देखते थे।

(ङ) लेखक को गंगा की धारा ऐसी लग रही थी जैसे कोई विशाल अजगर रेंग रहा हो।

(च) अंत में लेखक ने अपने शरीर की तुलना स्पंज की मूर्ति से की।

व्याकरण-बोध

उ०1. अभयास = अभ्यास
ऊपस्थित = उपस्थित
वयायाम = व्यायाम
यमूना = यमुना
मस्तिषक = मस्तिष्क
महनतम = महानतम
खयाति = ख्याति
परस्ताव = प्रस्ताव

उ०2. योग्य = योग्यता
पवित्र = पवित्रता
उपयोगी = उपयोगिता
सीधा = सीधापन
विशाल = विशालता
भोला = भोलापन

उ०3. पंडित = पंडिताइन
बालिका = बालक
वृद्ध = वृद्धा
देवी = देवता
युवक = युवती
नदियाँ = सागर
शिष्य = शिष्या

उ०4. गुरु = शिष्य
उपस्थित = अनुपस्थित
साधारण = असाधारण
देश = विदेश
स्वर्ग = नरक
आवश्यक = अनावश्यक
व्यापक = सीमित
निवासी = प्रवासी

उ०5. स्फटिक = पारदर्शी पत्थर
ज्ञान = अध्ययन
क्षमता = योग्यता
पवित्र = शुद्ध
असीम = अनंत
योग्य = लायक
माध्यम = साधन
बल = ताकत
मस्तिष्क = दिमाग
निश्चय = निर्णय
उद्देश्य = लक्ष्य
आवश्यक = जरूरी

उ०6. (क) सबका अलग-अलग माध्यम है।
(ख) उत्तर प्रदेश में दो नदियाँ बहती हैं– गंगा और यमुना।
(ग) यमुना के किनारे रहने वाले रासलीला करते हैं।
(घ) आँख, कान, नाक, मुँह तथा सारे शरीर से पानी टपक रहा था।
(ङ) हाथ-पैर तो चला ही रहा था, मरता क्या न करता।

उ०7. (क) अधिकार = शिक्षा पर सबका अधिकार है।
(ख) माध्यम = सब कलाओं का अलग माध्यम है।
(ग) व्याकरण = व्याकरण राइन पानी पीने वाला हर व्यक्ति जानता है।
(घ) संभव = तैरना सबके लिए संभव नहीं है।
(ङ) उद्देश्य = लेखक का उद्देश्य तैराकी सीखना था।